6

स्पष्ट (~~Distinct~~) तथा निःसंदिग्ध (Indubitable) ज्ञान है जिसमें शंका का कहीं गुंजाइश नहीं है। इस आत्मज्ञान से ~~Descartes~~ ईश्वर तथा ईश्वर से विश्व निःसृत (Deduced) होता है। इस तरह अपने दर्शन में Descartes निगमनात्मक पद्धति का भी प्रयोग करते हैं।

संशयात्मक पद्धति के आधार पर एक प्रकार, सत्य, स्पष्ट-बोध की कल्पना हुई क्योंकि मान्यता है इसलिए हुई। इस प्रकार Descartes की संशयात्मक पद्धति को Pyrrho तथा Sextus के सन्देहवाद (Scepticism) से सर्वथा भिन्न समझना चाहिए। दोनों के विचार में जो अन्तर है इस प्रकार है — संदेहवाद संदेह को साध्य मानता है। संदेह, संदेह के लिए किया जाता है। परन्तु Descartes की शंका सत्य ज्ञान की प्राप्ति के लिए साधन है। संदेहवाद के अनुसार कोई भी निश्चित ज्ञान संभव नहीं है, परन्तु Descartes के अनुसार शंका पद्धति ज्ञान की निश्चयता का निर्धारण करती है। पूर्ण सन्देहवाद एक आत्मघातक (Contradictory) सिद्धांत है। संदेहवादी कम से कम अपने सन्देहवाद को तो सन्देह की दृष्टि से नहीं देखते। परन्तु Descartes की शंका-पद्धति शुद्ध बौद्धिक प्रक्रिया है। यह पद्धति तो शंका निवारण के लिए है। अर्थात साधन है साध्य नहीं। साध्य तो मूल्यपरक तथा सुनिश्चित सत्य की प्राप्ति है।

Descartes की शंका और मनोवैज्ञानिक शंका (Psychological doubt) में भेद है — Descartes की शंका सम्पूर्ण मानवीय अनुभवों के प्रति है। वह निश्चय, परोक्ष, और जानबूझ कर की जाती है, परन्तु मनोवैज्ञा-

निषेधात्मक शंका विशेष पदार्थों के प्रति होता है यह पक्षपात-पूर्ण, अपर्याप्त और अज्ञान में होती है। Descartes की शंका पद्धति आत्मनिष्ठ, तार्किक, व्यवस्थित और वैधिक ज्ञान के वस्तुविषय में होती है।

संक्षेप में Descartes के नियामक (Regulative) नियमों की पद्धति, अर्थात की निगमनात्मक पद्धति तथा उसकी व्यावहारिक आगमनात्मक ज्ञान की शंका पद्धति के द्वारा आत्मा की सत्ता का ज्ञान (Intuition) प्राप्त होता है, क्योंकि प्रमाणीकरण करते हुए बहुत स्पष्ट होता है। आत्मा की सत्ता का स्पष्ट-स्पष्ट सहबोध होता है। Descartes ने स्पष्ट करके सिद्ध कर दिखलाया कि आत्मा की सत्ता बुद्धिग्राह्य है।

Descartes के पूर्ववर्ती अर्थात युग में हुआ था इनके संशयात्मक विधि ने दर्शन को युग में बुद्धिवादी युग में ला दिया। अर्थात युग से निकालकर बुद्धिवादी युग में ला दिया। विचार स्वातंत्र्य के पक्ष को स्वीकार करने के कारण Descartes की विधि ने धार्मिकों के लिए मैं नास्तिकता का अधिकार प्रदान कर दिया। इसके बावजूद भी आलोचकों ने इनके संशयात्मक विधि की बहुत सारी आलोचनाएँ की हैं जिसमें निम्नांकित महत्वपूर्ण है—

1) Russell के अनुसार हमारे प्रत्यक्ष भ्रांत होते हैं, इससे तर्कतः सिद्ध होता है कि हमें सदैव धोखा नहीं दिया जा सकता है अर्थात हमारे भ्रांत प्रत्यक्षों के प्रति संदेह (जागरूक) होना, यह सिद्ध करता है कि हमारे (अनुभव) सभी प्रत्यक्ष भ्रामक नहीं हो सकते।

2) A.J. Ayer के अनुसार जिसे प्रामाणिक प्रत्यक्ष को अभ्रांत तथ्यों के आधार रूप में ही प्राप्त (प्रामाणिक) कहा जा सकता है। यदि सभी तथ्यों को प्रामाणिक कहा जाए तो प्रामाणिक शब्द अर्थहीन हो जायेगा।

3) Descartes की प्रतिज्ञा यह है कि वे किसी तथ्य को प्रमाणित किए बिना स्वीकार नहीं करेंगे। इस प्रतिज्ञा की प्राप्ति के लिए वे व्यापक सन्देह से अपने दर्शन का आरंभ करते हैं। वे मानकर चलते हैं कि व्यापक सन्देह संभव है। सन्देह को प्रमाण की क्या आवश्यकता है? पर प्रमाणित किए बिना शंका पद्धति मात्र मान्यता रह जाती है। दर्शन का कार्य मान्यता की विवेचना है। वह Descartes नहीं कर सके। यो मह में कम मूलभूत बात नहीं है कि सभी तथ्यों को प्रमाणों से सिद्ध किया जाय। वस्तुतः Descartes ने मध्यकालीन कई प्रत्ययों को यथावत् स्वीकार कर लिया। Aristotle के निगमनात्मक पद्धति, पदार्थ (substance) धर्म (Attribute) के संबंध को इन्होंने मान लिया। ईश्वर आदि तथ्यों को बिना प्रमाणित किये ही मानकर अपनी प्रतिज्ञा का हनन किया।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि Descartes ने सन्देह का प्रयोग निश्चित ज्ञान की प्राप्ति के साधन के रूप में किया है। मैं सोचता हूँ, इसलिए हूँ अर्थात आत्मा के स्वतः सिद्ध हो जाने के बाद इसका सन्देह समाप्त हो जाता है। Descartes के सन्देह की उपयोगिता इस बात में है कि इससे हमारे वैज्ञानिक विश्वासों पर विचार करने की प्रेरणा मिलती है। इसका लक्ष्य समस्त पूर्वाग्रहों से रहित होकर सत्य की खोज करना है।